इन देशों के बीच भी मजदूरी दरों में अन्तर पाए जाते हैं। इस तरह, यह सिद्धान्त कम विकसित देशों पर ही नहीं बल्कि विकसित देशों पर भी समान रूप से लागू होता है।

3. यह सिद्धान्त मानता है कि लाभ की दरें विकसित देशों तथा अल्प-विकसित देशों में समान होती हैं, परन्तु यह मान्यता वास्तविक नहीं है, क्योंकि विकसित देशों में उत्पादन की दक्ष तकनीक अपनाने के कारण लाभ की दर प्रायः अधिक रहती है। चूँकि असमान विनिमय होता है, अतः इस सिद्धान्त के अनुसार लाभ की दर विकसित देशों के शोषण के साथ निश्चय ही बढ़ती है।
4. इस सिद्धान्त के अनुसार, व्यापार में असमान विनिमय से विकसित देशों द्वारा कम विकसित देशों का शोषण होता है, परन्तु अर्थशास्त्री इमैन्युअल के इस मत से सहमत नहीं हैं, क्योंकि असमान विनिमय ने कम विकसित देशों की वृद्धि को अवरुद्ध नहीं किया है।
5. इस सिद्धान्त में यह भी मान लिया गया है कि पूंजी विभिन्न देशों के बीच गतिशील होती है। यदि यह सत्य है तो मजदूरी अन्तरों को विकसित से अल्प-विकसित देश की ओर पूंजी की गति करने से दूर किया जा सकता है।

इस तरह यह सिद्धान्त वास्तविकता से दूर है।

### हेक्सचर-ओहलिन का सिद्धान्त (Heckscher-Ohlin Theory)

हेक्सचर-ओहलिन का सिद्धान्त रिकार्डो के तुलनात्मक लाभ सिद्धान्त का विरोध नहीं करता बल्कि पूरकता प्रदान करता है। रिकार्डो का तुलनात्मक लाभ सिद्धान्त यह मत प्रस्तुत करता है कि दो देशों में तुलनात्मक लागत अन्तर के कारण विदेशी व्यापार होता है, किन्तु रिकार्डो का सिद्धान्त इस बिन्दु पर कोई प्रकाश नहीं डालता कि देशों में उत्पादन लागत में अन्तर क्यों उत्पन्न होता है? हेक्सचर-ओहलिन अर्थशास्त्रियों ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया।"

हेक्सचर-ओहलिन ने रिकार्डो के सिद्धान्त के कुछ बिन्दुओं से अपनी असहमति व्यक्त की और यह मत व्यक्त किया कि,

(*i*) तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त सब प्रकार के व्यापार पर लागू होता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार इसका अपवाद नहीं है।

(*ii*) जैसा कि प्रतिष्ठित सिद्धान्त में स्वीकार किया गया है, उत्पत्ति के साधनों में गतिशीलता का अभाव केवल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का ही विशेष लक्षण नहीं है वरन् एक ही देश के विभिन्न क्षेत्रों में भी साधनों की गतिशीलता का अभाव पाया जाता है।

उपर्युक्त दूसरी बात से स्पष्ट है कि एक ही देश के विभिन्न क्षेत्रों में मजदूरी एवं ब्याज की दरों में भिन्नता पायी जाती है। ने बताया कि जिस प्रकार एक ही देश में श्रम और पूंजी में गतिशीलता पायी जाती है उसी प्रकार विभिन्न देशों में भी इन साधनों में गतिशीलता होती है, भले ही वह कुछ सीमित रूप में हो। इस आधार पर ने यह स्पष्ट किया कि गृह व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में उतना व्यापक अन्तर नहीं है जितना कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने बताया था। उनके अनुसार,

के अनुसार

विभिन्न राष्ट्र मात्र विभिन्न क्षेत्र हैं जिनमें राष्ट्रीय सीमाएं, प्रशुल्क बाधाएं एवं भाषा, रीति-रिवाजों की भिन्नता के कारण भेद स्थापित हो जाता है। परन्तु ये भिन्नताएं विभिन्न देशों में स्वतन्त्र व्यापार के लिए स्थायी बाधाएं समाप्त हो जाती हैं। इन्हीं बातों के आधार पर ने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए पृथक् सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं है वरन् जिस (General Theory of Value) को अन्तक्षेत्रीय व्यापार पर लागू किया जाता है, उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर भी लागू किया जा सकता है।

मूल्य के सामान्य सिद्धान्त के अनुसार, एक वस्तु के मूल्य का निर्धारण बाजार में उसकी कुल मांग और कुल पूर्ति के द्वारा होता है। सन्तुलन के बिन्दु पर मांग और पूर्ति आपस में बराबर होते हैं तथा वस्तु का मूल्य उसकी औसत

नोट

लागत के बराबर होता है। उत्पत्ति के साधनों को मिलने वाला पुरस्कार, वस्तु की लागत को निर्धारित करता है तथा उक्त पुरस्कार उपभोक्ताओं की आय और मांग का स्वरूप निर्धारित करता है। इस प्रकार वस्तु के मूल्य, उत्पत्ति के साधनों के पारिश्रमिक, वस्तुओं की मांग तथा उत्पत्ति के साधनों की मांग एवं पूर्ति में पारस्परिक सम्बन्ध होता है। यही मूल्य के सामान्य सिद्धान्त का प्रमुख तत्व है।

जहां तक मूल्य के सामान्य सन्तुलन का प्रश्न है, यह एक देश अथवा क्षेत्र के एक बाजार (Single Market) पर लागू होता है। का मत है कि उक्त सन्तुलन केवल समय तत्व पर विचार करता है एवं क्षेत्र (स्थान) तत्व (Space factor) की अवहेलना करता है परन्तु निम्न दो कारणों से आर्थिक जीवन में क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है–(*i*) कुछ सीमा तक उत्पत्ति के साधन किन्हीं न किन्हीं क्षेत्रों तक सीमित रहते हैं, और (*ii*) परिवहन लागत तथा अन्य बाधाएं वस्तु के स्वतन्त्र प्रवाह को सीमित करती हैं।

ने स्पष्ट किया कि यदि सामान्य मूल्य के सिद्धान्त में क्षेत्र तत्व को भी शामिल कर लिया जाए तो उसे विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न देशों के बहुत-से बाजारों के मूल्य निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त एक बहु-बाजार (Multi-market) का सिद्धान्त है। चूंकि ओहलिन ने अपना सिद्धान्त सामान्य सन्तुलन सिद्धान्त पर आधारित किया है, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आधुनिक सिद्धान्त को भी कहते हैं।

के सिद्धान्त के सार को निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया जा सकता है, "दो देशों में व्यापार वस्तुओं की लागतों में सापेक्षिक अन्तर के कारण होता है तथा यह अन्तर दो कारणों से होता– (*i*) प्रथम तो यह कि उत्पत्ति के साधनों की कीमत में सापेक्षिक अन्तर होता है; और (*ii*) द्वितीय यह कि विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में उत्पत्ति के साधनों की आवश्यकता में सापेक्षिक भिन्नता होती है। उत्पत्ति के साधनों की कीमतों में सापेक्षिक अन्तर इसलिए होता है कि दो देशों में साधनों की सीमितता या स्वल्पता में सापेक्षिक अन्तर होता है अर्थात् एक देश में कुछ साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं जबकि दूसरे देश में वही स्वल्प मात्रा में उपलब्ध होते हैं। के शब्दों में "अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की पूर्व आवश्यकताएँ निष्कर्ष रूप में हैं–विभिन्न सापेक्षिक स्वल्पता (Relative scarcity) अर्थात्

इस आधार पर कहा जा सकता है कि एक देश उन वस्तुओं का विशिष्टीकरण और निर्यात करता है जिनके उत्पादन में सापेक्षिक रूप से उन साधनों की अधिक आवश्यकता होती है जो उस देश में सापेक्षिक रूप से प्रचुर मात्रा में और इसलिए सापेक्षिक रूप से सस्ते होते हैं।

(Assumptions of the Heckscher-Ohlin Theory)

हेक्सचर-ओहलिन का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत जिसकी संक्षिप्त रूपरेखा ऊपर प्रस्तुत की गयी है, निम्न मान्यताओं पर आधारित है–

(*i*) व्यापार के लिए (Double model) को लिया गया है जिसमें दो देश, दो वस्तुएं और उत्पत्ति के *दो साधन हैं–श्रम एवं पूंजी।*

(*ii*) दोनों देशों में, वस्तुओं और उतपत्ति के साधनों-दोनों बाजारों में है।

(*iii*) दोनों देशों में न तो कोई व्यापार की बाधाएं हैं और न परिवहन व्यय होता है अर्थात् एवं है।

(*iv*) प्रत्येक देश में उत्पत्ति के साधन पूर्ण रूप से गतिशील हैं, किन्तु दोनों देशों के बीच उत्पत्ति के है।

(*v*) दोनों देशों में उत्पत्ति के दोनों साधनों (श्रम और पूंजी) के अनुपात में भिन्नता है अर्थात् (Quanititatively) (Qualitatively)
अर्थात् वे समान (Homogenous) हैं।

नोट

(*vi*) दोनों देशों में विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन-फलन (Production function) भिन्न-भिन्न है, किन्तु है।

नोट्स प्रत्येक देश में उत्पादन, (Constant Return to scale) के अन्तर्गत होता है।

(*vii*) विभिन्न वस्तुओं के लिए उत्पादन-फलन इस प्रकार है कि (Factory intensity) के द्वारा पृथक् किया जा सकता है अर्थात् प्रत्येक वस्तु के उत्पादन के लिए कितने साधनों की आवश्यकता होती है, यह जाना जा सकता है अथवा अमुक वस्तु के उत्पादन में अधिक पूँजी लगती है अथवा अधिक श्रम।

(*viii*) दोनों देशों में उपभोक्ताओं का (Identical preference) है।

(*ix*) उत्पत्ति के दोनों साधनों को दोनों देशों में (Full Employment) प्राप्त है।

(*x*) प्रत्येक देश में (Fixed physical conditions) हैं।

## सापेक्षिक साधन प्रचुरता का अर्थ (Meaning of Relative Factor Aboundance)

ने अपने सिद्धान्त में सापेक्षित साधन प्रचुरता शब्द प्रयोग किया है, इसके दो अर्थ हैं–(*i*) सापेक्षिक साधन प्रचुरता (Physical Criteria) अर्थात् साधनों के अनुपात के सम्बन्ध में सापेक्षिक प्रचुरता (*ii*) सापेक्षिक साधन प्रचुरता की (Price Criteria)।

(*i*) जहां तक साधनों के अनुपात के सम्बन्ध में सापेक्षिक प्रचुरता का प्रश्न है एक देश सापेक्षिक रूप से उस पूंजी-प्रचुर समझा जाता है यदि उस देश में दूसरे देश की तुलना में, श्रम की अपेक्षा पूंजी का अनुपात अधिक होता है भले ही इस देश में श्रम की तुलना में पूंजी की कीमतों का अनुपात दूसरे देश की अपेक्षा कम हो या न हो। इस निम्न सूत्र में व्यक्त किया जा सकता है–

$$\left(\frac{C}{L}\right)_A > \left(\frac{C}{L}\right)_B$$

(*ii*) कीमत कसौटी के आधार पर एक देश को, जिसें पूंजी सापेक्षिक रूप से सस्ती होती है और श्रम सापेक्षिक रूप से महंगा होता है, पर्मजी-प्रचुर समझा जाता है भले ही इस देश में श्रम पे पूँजी की कुल इकाइयों का अनुपात दूसरे देश की तुलना में अधिक हो अथवा न हो।

यदि हम एक देश को A तथा दूसरे को B मानें, P का अर्थ साधन की कीमत से लें, C को पूंजी तथा L का श्रम मानें तो को निम्न सूत्र में व्यक्त किया जा सकता है–

$$\left(\frac{PC}{PL}\right)_A < \left(\frac{PC}{PL}\right)_B$$

उपर्युक्त सूत्र से स्पष्ट होता है कि देश A में तुलनात्मक रूप में पूंजी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है इस देश B में तुलनात्मक रूप से श्रम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

ऊपर सापेक्षिक साधन प्रचुरता के भौतिक कसौटी पर और कीमत कसौटी पर जो अर्थ दिये गये हैं, वे दोनों समान नहीं हैं। यदि हम कीमत कसौटी को लें तो उपर्युक्त मान्यताओं के आधार पर ही हेक्सचर-ओहलिन के सिद्धान्त को स्पष्ट किया जा सकता है एवं मांग की दशाओं के सम्बन्ध में किसी मान्यता की आवश्यकता नहीं है, किन्तु यदि

हम भौतिक कसौटी को लेते हैं तो हेक्सचर-ओहलिन का सिद्धान्त उसी समय सिद्ध किया जा सकता है जब हम मांग की दशाओं पर विचार करें। ऐसी स्थिति मांग की दशाओं के सम्बन्ध में मान्यताओं की आवश्यकता पड़ती है।

नोट

*टास्क* कीमत कसौटी पर साधन प्रचुरता से आप क्या समझते हैं?

### हेक्सचर-ओहलिन सिद्धान्त की व्याख्या (Explanation of Heckscher-Ohlin theory)

हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि

क्योंकि आधुनिक सिद्धान्त भी तुलनात्मक लाभ को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार मानता है। उन दोनों में प्रमुख अन्तर यह है कि जहां प्रतिष्ठित सिद्धान्त इस बात का उत्तर देने में असफल रहा कि दो देशों में तुलनात्मक लागत में अन्तर क्यों होता है, आधुनिक सिद्धान्त ने इसका संतोषजनक उत्तर दिया। ने अधिक मौलिकता के साथ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मूल आधार को प्रस्तुत किया और उन कारणों को स्पष्ट किया जिनके कारण दो देशों की तुलनात्मक लागत के अनुपातों में भिन्नता होती है।

### विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में साधनों की भिन्नता

ओहलिन ने स्पष्ट किया कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार केवल अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार की ही एक विशेष दशा है। अन्तर्क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कोई मौलिक अन्तर न होकर अन्तर केल मात्रा सम्बन्धी ही है। उन्होंने बताया कि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पत्ति के साधनों में भिन्नता होती है तथा विभिन्न वस्तुओं के लिए विभिन्न साधन अनुपातों की आवश्यकता होती है। इसे ध्यान में रखते हुए एक क्षेत्र उन वस्तुओं के उत्पादन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है जिनमें उन साधनों का अधिक अनुपात में प्रयोग किया जाता है जो वहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। अतः साधनों में भिन्नता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन की क्षमता भी भिन्न-भिन्न होती है।

### साधन उपलब्धता : उत्पादन का आधार (Factor Endowment : The Basis of Production)

अब तक यह स्पष्ट किया जा चुका है कि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पत्ति के साधनों की उपलब्धता में विभिन्नता के कारण, वहां उत्पादन में भिन्नता होती है। इसे हम एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करेंगे–मान लो दो क्षेत्र X और Y हैं। X क्षेत्र में पूँजी प्रचुर मात्रा में तथा श्रम स्वल्प मात्रा में उपलब्ध है। स्वाभाविक है कि X में पूंजी प्रचुर मात्रा में होने के कारण सस्ती होगी तथा श्रम महँगा होगा अतः X में मशीनों का निर्माण सस्ता होगा जिसमें अधि मात्रा में पूँजी की लगती है एवं गेहूँ महँगा होगा जिसमें श्रम अधिक लगता है। यदि क्षेत्र Y में श्रम का बाहुल्य है और पूँजी न्यूनता है तब Y क्षेत्र में मशीनें महँगी होंगी क्योंकि वहां पूंजी स्वल्प मात्रा में तथा गेहूँ सस्ता होगा क्योंकि इसके उत्पादन में श्रम अधिक लगता है तथा Y क्षेत्र में श्रम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इस प्रकार दोनों क्षेत्रों में विभिन्न वस्तुओं की कीमतों में भिन्नता होगी। इस आधार पर कहा जा सकता है कि X को उस वस्तु (मशीनें) के उत्पादन में तुलनात्मक लागत का लाभ होगा जिसके उत्पादन में उन साधनों की अधिक आवश्यकता होती है जो वहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं अतः सस्ते हैं। इसी प्रकार Y को उस वस्तु (गेहूँ) के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ होगा जिससे उत्पादन में उन साधनों की अधिक आवश्यकता होती है जो वहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण सस्ते हैं।

### वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण मांग और पूर्ति दोनों से

ओहलिन की दृष्टि में व्यापार की पहली शर्त यह है कि वही वस्तु एक क्षेत्र में, दूसरे की तुलना में अधिक सस्ती दर पर पैदा की जा सके। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार का तात्कालिक कारण यह है कि मौद्रिक कीमतों में, अपने देश में उत्पादन करने की तुलना में, अन्य क्षेत्र या देश से वस्तुएं अधिक सस्ते में क्रय की

नोट

जा सकती हैं। ने स्पष्ट किया कि (Original Cost)

वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण केवल उत्पादन की लागत द्वारा नहीं वरन् मांग द्वारा भी होता है। अतः का सिद्धांत मांग और पूर्ति दोनों पक्षों पर विचार करता है।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि दो क्षेत्रों में कीमतों में सापेक्षिक अन्तर इसलिए होता है क्योंकि दोनों क्षेत्रों में मांग और पूर्ति की दशाओं में अन्तर होता है। केवल निम्न दशाओं में दो क्षेत्रों में सब वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतें समान होंगी–

(*i*) जब दोनों में उपभोक्ताओं की आवश्यकताएं और अधिमान एकसमान हैं।

(*ii*) जब दोनों क्षेत्रों में उपलब्ध साधन समान अनुपात में हैं जिससे दोनों क्षेत्रों में पूर्ति की दशाएं समान हैं।

(*iii*) यदि उत्पत्ति के साधनों में कोई अन्तर होता है तो मांग की दशाओं में भी उतना ही अन्तर होकर क्षतिपूर्ति हो जाती है तथा सन्तुलन स्थापित हो जाता है।

किन्तु उपर्युक्त मान्यताएं वास्तविक जगत में पूरी नहीं होती अतः उत्पत्ति के साधनों की कीमतों में एवं उसके कारण वस्तुओं की कीमतों में दो क्षेत्रों में भिन्नता पायी जाती है।

### ओहलिन द्वारा स्पष्टीकरण

**ओहलिन** ने अपने साधन अनुपात सिद्धान्त के समर्थन में अमेरिका और भारत में होनेवाले व्यापार का उदाहरण दिया है। भारत में गेहूं तथा ऊन का उत्पादन किया जाता है क्योंकि इसके उत्पादन के लिए जिस श्रेणी की भूमि की आवश्यकता होती है, वह भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अमेरिका में निर्मित वस्तुओं (Manufactured Goods) का उत्पादन किया जाता है क्योंकि इनके उत्पादन में अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है जो अमेरिका में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तथा भारत में अल्प मात्रा में हैं। अतः इन दोनों वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतों में भिन्नता है अतः दोनों देशों में व्यापार होता है। भारत ऊन और गेहूं का निर्यात अमेरिका को करता है अर्थात् वह अप्रत्यक्ष रूप में उन साधनों का निर्यात करता है जो उस देश में प्रचुरता में उपलब्ध हैं और जब वह विनिर्माण वस्तुओं का आयात करता है तो वह अप्रत्यक्ष रूप से उन साधनों का आयात करता है जो उसके देश में स्वल्प मात्रा में उपलब्ध हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि साधनों में विभिन्न अनुपातों के कारण एक क्षेत्र में कुछ वस्तुएं दूसरे क्षेत्र की तुलना में सस्ती होंगी किन्तु केवल इसके कारण ही इस बात का निर्धारण नहीं किया जा सकता कि दोनों क्षेत्रों के बीच किन वस्तुओं का व्यापार होगा। यह उसी समय सम्भव है जब एक क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं की कीमतों की तुलना, दूसरे क्षेत्र से की जा सके। यह तुलना उसी समय सम्भव है जब या तो दोनों क्षेत्रों में एकसमान मुद्रा चलती हो अथवा विभिन्न मुद्रा होने पर दोनों मुद्राओं में विनिमय दर स्थापित कर ली गयी हो। इन दोनों को अग्र उदाहरण देकर स्पष्ट करेंगे–

(1) (Same Currency in both Regions)–कल्पना करो कि दो क्षेत्र A और B हैं जिनमें एकसमान मुद्रा प्रणाली है। यदि इन दोनों में व्यापार नहीं होता तो प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण आन्तरिक मांग के द्वारा होगा। अब यदि दोनों क्षेत्रों से व्यापार होता है तो एक क्षेत्र की कीमत पर दूसरे क्षेत्र की मांग का भी प्रभाव पड़ेगा। क्षेत्र A में ऐसी वस्तु का उत्पादन होगा जिनमें ऐसे साधनों की आवश्यकता होती है जो वहां प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। अब इस वस्तु की मांग न केवल A क्षेत्र में होगी वरन् B क्षेत्र में भी होगी। इसके विपरीत, क्षेत्र A में जो वस्तु स्वल्प साधनों के कारण महंगे में तैयार होती है, उसकी मांग B क्षेत्र में कम हो जाएगी। इस पारम्परिक मांग की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप एक सन्तुलन की स्थिति स्थापित हो जाती है जिसके अन्तर्गत दोनों क्षेत्रों में समान कीमतों की वस्तुओं का आयात तथा निर्यात होने लगता है।

नोट

(2) जब दो देशों व क्षेत्रों में विभिन्न मुद्रा प्रणाली प्रचलित रहती है तो यह जानने के लिए कि दूसरे क्षेत्र की तुलना में एक क्षेत्र में उत्पत्ति का कोई साधन सस्ता है या नहीं, दोनों क्षेत्रों की विभिन्न मुद्राओं में विनिमय दर स्थापित करना जरूरी है। के अनुसार, विनिमय दर निर्धारित होने के व कीमतों के सापेक्षिक अन्तर निरपेक्ष अन्तर में परिवर्तित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में किस प्रकार व्यापार होगा, इसे अग्र तालिका का उदाहरण देते हुए समझाया जा सकता है।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | (रुपयों में) | (रुपयों में) | = (रुपये में) | = (रुपये में) |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| A | 2.00 | 0.10 | 4.00 | 5.00 |
| B | 4.00 | 0.30 | 12.00 | 15.00 |
| C | 5.00 | 0.50 | 20.00 | 25.00 |
| D | 8.00 | 0.80 | 32.00 | 40.00 |

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत और अमेरिका दोनों देशों में उत्पत्ति के चार साधन A, B, C, D हैं। कालम 2 और 3 में दोनों देशों की अपनी मुद्रा में साधनों की कीमतें दिखायी गयी हैं अर्थात् भारत की कीमतें रुपयों में व्यक्त की गयी है तथा अमरीका में डालर (सेंट) में। दोनों देशों में साधन A सस्ता है तथा D महंगा है। फिर भी तालिका के कालम 2 तथा 3 से यह नहीं जाना जा सकता कि दोनों देशों में सापेक्षिक रूप से कौन-से साधन सस्ते और कौन-से महंगे हैं। यह जानने के लिए यह जरूरी है कि दोनों देशों में कीमतों से निरपेक्ष अन्तर को ज्ञात किया जाए। यह विनिमय दर स्थापित करने पर ही जाना जा सकता है। यदि विनिमय दर 1 डालर = 40 रु. है तो हम तालिका के कालम 4 के अनुसार, भारत की तुलना में, अमेरिका में साधनों की कीमतें बता सकते हैं। यदि हम कालम 2 एवं 4 की तुलना करें तो स्पष्ट है कि अमेरिका में साधन A और B तुलनात्मक रूप से सस्ते हैं जबकि भारत में C और D तुलनात्मक रूप से सस्ते हैं। यदि विनिमय दर 1 डालर = 50 रु. मान ली जाए तो कालम 2 और 5 की तुलना करने पर हम देखते हैं कि अमेरिका में केवल A ही सस्ता है तो अमेरिका इन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण करेगा जिनमें A और B साधनों को अधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है जबकि भारत उन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण करेगा जिनमें C और D साधनों का अधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है। जब विनिमय दर 1 डालर = 50 रुपये हो जाती है तो अमेरिका केवल उन वस्तुओं को ही तुलनात्मक रूप से सस्ते में बना सकता है जिसके उत्पादन में A साधन की अधिक आवश्यकता होती है, जबकि भारत उन वस्तुओं को सस्ते में तैयार कर सकता है जिसके उत्पादन में B, C और D साधनों की अधिक आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक क्षेत्र में सस्ते साधनों से प्रतिपादित किये हुए माल का निर्यात होगा और जो साधन उस देश में महंगे होंगे, उनसे तैयार होने वाली वस्तुओं का आयात किया जाएगा। विनिमय दर से हम यह जान सकते हैं कि दोनों क्षेत्रों में निरपेक्ष कीमतों में क्या अन्तर है तथा इससे यह जाना जा सकता है कि प्रत्येक क्षेत्र में कौन-से साधन सापेक्षिक रूपसे सस्ते एवं कौन-से महंगे हैं तथा प्रत्येक देश किन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण करेगा। यहां यह ध्यान में रखना चाहिए कि दोनों क्षेत्रों के बीच, साधनों का सापेक्षिक सस्ता

नोट

अथवा महंगा होना, विनिमय दर द्वारा निर्धारित नहीं किया जाता, विनिमय दर से तो केवल वास्तविक स्थिति का बोध होता है। स्वयं विनिमय दर पारस्परिक मांग द्वारा निर्धारित होती है। यदि साधनों की पूर्ति एवं पारस्परिक मांग की दशाएं दी हुई हैं तो विनिमय दर ऐसी होनी चाहिए कि एक क्षेत्र के निर्यातों और आयातों में सन्तुलन स्थापित हो जाए।

### कीमत कसौटी के आधार पर साधन प्रचुरता: ओहलिन के दृष्टिकोण का चित्रीय निरूपण

आरम्भ में हम स्पष्ट कर आये हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धान्त "सापेक्षिक साधन प्रचुरता पर" आधारित है जिसके दो अर्थ बताये गये हैं, कीमत की कसौटी और भौतिक कसौटी। ने कीमत कसौटी का अर्थ लिया है जिसे इस सूत्र द्वारा स्पष्ट किया गया है–

$$\left(\frac{PC}{PL}\right)_A < \left(\frac{PC}{PL}\right)_B$$

जो बताता है कि देश A में तुलनात्मक रूप में प्रचुर मात्रा में पूंजी उपलब्ध है तथा देश B में तुलनात्मक रूप में श्रम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। निम्न उदाहरण में हम इसी मान्यता को लेकर चल रहे हैं। दो वस्तुएं X और Y हैं। नीचे दिये हुए रेखाचित्र में दो समोत्पादक वक्र (Equal Product Curves) खींचे गये हैं–XX वस्तु X के लिए तथा YY वस्तु Y के लिए। ये दोनो वक्र एक-दूसरे को केवल एक ही स्थान पर M बिन्दु पर काटते हैं अत: X और Y दोनों वस्तुओं को इस आधार पर पृथक् किया जा सकता है कि किस वस्तु के उत्पादन में अधिक पूंजी लगती है तथा किस वस्तु के उत्पादन में अधिक श्रम लगता है। नीचे दिये हुए रेखाचित्र से यह स्पष्ट है।

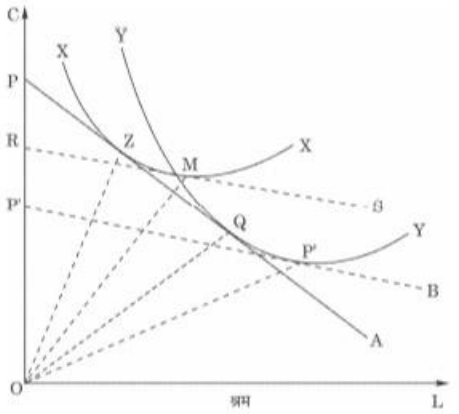


उपर्युक्त रेखाचित्र में दोनों समोत्पाद वक्र XX और YY से यह जाना जा सकता है कि इन दोनों वस्तुओं की किसी दी हुई मात्रा के उत्पादन के लिए कितनी मात्रा में पूंजी और श्रम की आवश्यकता होती है। मितव्ययता के दृष्टिकोण से साधनों का कौन-सा संयोग सर्वोत्तम होगा, यह उन साधनों की सापेक्षिक कीमतों पर निर्भर रहता है। देश A में साधनों की सापेक्षिक कीमत को कीमत रेखा PA द्वारा दर्शाया गया है जो इस देश के समोत्पादक वक्र XX को Z बिन्दु पर स्पर्श करती है। चित्र से यह भी स्पष्ट है कि कीमत रेखा PA समोत्पादक वक्र YY को भी O बिन्दु पर स्पर्श करती है।

चूँकि हम यह मान चुके हैं कि देश A में पूंजी तुलनात्मक रूप से सस्ती है, अत: B देश की कीमत रेखा का ढाल जो वहां साधनों के सापेक्षिक मूल्य को बताती है, A देश की कीमत रेखा PA से कम होना चाहिए। B देश की कीमत

रेखा P'B उस देश के समोत्पाद वक्र YY को T बिन्दु पर स्पर्श करती है। अब एक रेखा RS कीमत रेखा P'B के समान्तर खींची जाती है जो समोत्पाद वक्र XX को M बिन्दु पर स्पर्श करती है। चित्र से यह स्पष्ट है कि RS रेखा P'B रेखा के ऊपर है जिसका अर्थ यह है कि OC अक्ष पर पूंजी की मात्रा OR, उसी अक्ष OP' से अधिक के है। उपर्युक्त मान्यताओं के आधार पर देश A में, कीमत रेखा PA के आधार पर साधन अनुपात सन्तुलन (Equilibrium Factor Proportions) X वस्तु के लिए OZ है तथा Y वस्तु के लिए OQ है। अत: A देश में X वस्तु की निश्चित मात्रा का उत्पादन करने की लागत, श्रम और पूंजी दो साधनों की मात्राओं की लागत के बराबर है जो कीमत रेखा PA के Z बिन्दु से स्पष्ट है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि उक्त X वस्तु की लागत OP पूंजी की लागत के बराबर है। उसी प्रकार A देश में, वस्तु Y की निश्चित मात्रा का उत्पादन करने के लागत भी OP पूंजी की लागत के बराबर है क्योंकि कीमत रेखा PA, पूंजी अक्ष OC को P बिन्दु पर स्पर्श करती है। B देश में कीमत रेखा P'B (अथवा RS) के आधार पर साधन अनुपात सन्तुलन X वस्तु के लिए OM है तथा Y वस्तु के लिए OT है। अत: B देश में X वस्तु का उत्पादन करने की लागत OR पूंजी की लागत के बराबर है तथा Y वस्तु का उत्पादन करने की लागत OP' पूंजी के बराबर है। इससे स्पष्ट है कि B देश में वस्तु की निश्चित मात्रा का उत्पादन करने की लागत Y की तुलना में अधिक है।

अब यदि हम दोनों देशों में दोनों वस्तुओं की समान मात्रा की तुलनात्मक लागत की तुलना करें तो हम देखते हैं कि देश A में X वस्तु तुलनात्मक रूप से सस्ती है तथा B में वस्तु Y तुलनात्मक रूप से सस्ती है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है पूँजी-प्रचुर देश में उस वस्तु के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ होता है जिसमें पूंजी की अधिक मात्रा लगती है तथा व्यापार होने पर उसे ऐसी वस्तुओं का निर्यात करना चाहिए। उसी प्रकार जहां श्रम प्रचुरता से उपलब्ध है उस देश को ऐसी वस्तुओं का उत्पादन एवं निर्यात करना चाहिए जिसके उत्पादन में अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। इस प्रकार का सिद्धान्त इस बात की पुष्टि कर देता है कि

ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त निष्कर्ष बिना मांग की दशाओं और साधन अनुपातों को ध्यान में रखकर निकाले गये हैं, किन्तु ऐसी बात नहीं है।

नोट